सदस्यता | *साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2022 से पुरस्कृत लेखकों ने साझा किए अपने अनुभव*

अकादेमी की मानद महत्तर सदस्यता मोहंती को प्रदान की

वैभव न्यूज ■ नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित किए गए पुस्तकायन पुस्तक मेले के पाँचवें दिन विभिन्न गतिविधियां जारी रहीं। साहित्य अकादेमी सर्वोच्च सम्मान मानद महत्तर सदस्यता प्रख्यात लेखक एवं चित्रकार प्रफुल्ल मोहंती को साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार द्वारा प्रदान की गई। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक,ओड़िआ परामर्श मंडल के संयोजक बिजयानंद सिंह एवं साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव मंच पर उपस्थित थे। महत्तर सदस्यता के रूप में उन्हें एक शॉल और ताम्र.फलक प्रदान किया गया। अपना स्वीकृति वक्तव्य देते हुए प्रफुल्ल मोहंती ने कहा कि एक गाँव का बच्चा जो खुद पढ़ा और आगे बढ़ा, के लिए यह बहुत बड़ी उपलब्धि है। कार्यक्रम के आरंभ में सभी का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने प्रफुल्ल मोहंती के सम्मान में प्रकाशित प्रशस्ति.पत्र का पाठ किया। कल पुरस्कृत हुए बाल साहित्यकारों ने आयोजित लेखक सम्मिलन में अपनी-अपनी रचना-प्रक्रिया के बारे में अपने विचार साझा किए। सभी बाल लेखकों का कहना था कि बच्चों के लिए और गंभीरता से लिखने की जरूरत है और बच्चों के लिए लिखते हुए हमें वर्तमान परिदृश्य, खासतौर पर तकनीकी परिवर्तनों,को बहुत ध्यान से प्रस्तुत करना होगा। सभी ने बाल लेखन की प्रेरणा बचपन में दादा-दादी और नाना-नानी के साथ बिताए समय से प्राप्त करने की बात कही। अपने प्रिय लेखक से मिलिए कार्यक्रम के अंतर्गत प्रख्यात बाल लेखिका क्षमा शर्मा ने उपस्थित बच्चों के साथ रोचक संवाद किया और अपनी रचनाएं प्रस्तुत कीं। आज का बाल साहित्य बहुत बदल गया है। बच्चों के बीच मोबाइल की व्यापक उपलब्धि ने जहां बच्चों के लिए कई नई क्षमताएं बढ़ाई हैं वहीं उसके अधिक इस्तेमाल से अनेक समस्याएं खड़ी हुई हैं। उन्होंने तकनीकी रफ्तार में बच्चों की मासूमियत को बचाए रखने की अपील की। बच्चों को कहानी और कुछ कविताएं बड़े रोचक ढंग से सुनाईं। बाल साहित्य के समक्ष चुनौतियां विषयक चर्चा कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रख्यात मराठी लेखक राजीव तांबे ने की और उसमें जँया मित्र बाङ्ला वर्षा दास, गुजराती एवं सम्पदानन्द मिश्र, संस्कृत ने अपने-अपने भाषा के बाल साहित्य की स्थिति और उसके समक्ष चुनौतियों की बात की तथा अपनी-अपनी रचनाएं भी प्रस्तुत कीं। सभी लेखकों ने अपनी-अपनी भाषाओं में बाल पत्रिकाओं की कमी और बाल साहित्य की।